بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 31 जनवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

ज़ीक़र्द नामक युद्ध, हज़रत अबान बिन सईद नामक सरिय्या नजद की ओर तथा खैबर के युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-31.01.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले जुमः को ज़ीक़र्द नामक युद्ध के विषय में वर्णन हो रहा था, जैसा कि बताया था कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस युद्ध में जाने से पहले कुछ सहाबियों रज़ी. को दुश्मन की ओर रवाना फ़रमाया था और आप स. फिर उनके पीछे अपनी सेना लेकर रवाना हुए। इसके सम्बन्ध में आगे लिखा है कि जब आँहज़रत स. और सहाबा रज़ी. आए तो दुश्मन की सेना ने इन्हें देखा और वे भाग गए। जब मुसलमान दुश्मन के पड़ाव की जगह पहुंचे तो हज़रत अबू क़तादा का घोड़ा वहां मौजूद था जिसकी कून्चें कटी हुई थीं। एक सहाबी ने कहा कि या रसूलुल्लाह स.! अबू क़तादा के घोड़े की कून्चें तो कटी हुई हैं। आँहुज़ूर स. उसके पास खड़े हुए और दो बार फ़रमाया कि तेरा भला हो! जंग में तेरे कितने दुश्मन हैं। फिर रसूलुल्लाह स. और सहाबा रज़ी. आगे चल दिए, यहाँ तक कि उस जगह पहुंचे जहाँ अबू क़तादा रज़ी. और मसअदा ने कुश्ती की थी (पिछले ख़ुत्बे में इसके बारे में बयान हुआ था) तो उन्होंने समझा कि अबू क़तादा रज़ी. चादर लपेटे पड़े हैं। एक सहाबी ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! लगता हैं अबू क़तादा शहीद हो गए हैं। आप स. ने फ़रमाया कि अल्लाह अबू क़तादा पर रहम करे, उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे सम्मान दिया है, अबू क़तादा तो दुश्मन के पीछे है और विजय का गीत पढ़ रहा है। हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. जल्दी से आगे बढ़े और चादर हटाई तो मसअदा का चेहरा देखा। इन दोनों

ने कहा कि अल्लाहु अकबर! अल्लाह और उसके रसूल स. ने सच कहा, या रसूलुल्लाह! यह मसअदा है। इस पर सहाबा रज़ी. ने भी तकबीर कही। फिर थोड़ी देर बाद ही हज़रत अबू क़तादा रज़ी. ऊँटनियाँ हांकते हुए आँहज़रत स. की दिव्य सेवा में उपस्थित हो गए।

आप स. ने फ़रमाया- ऐ अबू क़तादा! तुम्हारा चेहरा सफल हो गया। अबू क़तादा घुड़ सवारों के सरदार हैं। ऐ अबू क़तादा! अल्लाह तुम में बरकत रख दे। दूसरी रिवायत में है कि तुम्हारी संतान तथा संतान की संतान में बरकत रख दे। फिर आप स. ने फ़रमाया कि ऐ अबू क़तादा, यह तुम्हारे चेहरे पर क्या हुआ है? वे कहने लगे कि मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों! मुझे एक तीर लगा था, उस ज़ात की क़सम जिसने आप स. को प्रतिष्ठा प्रदान की, मेरा विचार था कि मैंने वह तीर निकाल दिया था। आप स. ने फ़रमाया कि मेरे निकट आओ। मैं निकट हुआ तो आप स. ने सरलता पूर्वक वह तीर निकाल दिया और अपने पवित्र मुंह का थूक लगाया और अपना हाथ उस पर रखा। वे कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसने आप स. को नबुव्वत प्रदान की, मुझे यूं लगता था कि जैसे मुझे कोई चोट ही न लगी हो और न घाव लगा हो। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह स. ने जब हज़रत अबू क़तादा रज़ी. को देखा तो फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! इसके बालों तथा इसकी त्वचा में बरकत रख दे, और फ़रमाया कि तुम्हारा चेहरा सफल हो गया। वे कहते हैं कि मैंने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स.! आप स. का चेहरा सफल हो गया। फिर जब सत्तर साल की आयु में आप रज़ी. का निधन हुआ, तब भी कहते हैं कि वे चेहरे से पन्द्रह वर्ष के लगते थे।

रसूलुल्लाह स. के ज़ुलक़र्द पहुँचने के बारे में बयान हुआ है, हज़रत सलमा रज़ी. कहते हैं कि आप स. इशा के समय पहुंचे और चश्मे पर पड़ाव डाला, जहाँ मैंने दुश्मन को रोका था, आप स. ऊँटनियाँ और हर चीज़ जो मैंने दुश्मन से छीनी थी, अपने अधिकार में ले चुके थे। हज़रत बिलाल रज़ी. ने उन ऊंटों में से एक ऊँट ज़िबह किया, जो दुश्मन से छीने गए थे और आँहज़रत स. के लिए उसका कलेजा और कूहान भूनी। हज़रत सअद बिन उबादा रज़ी. ने खजूरों से लदे हुए दस ऊँट भेजे जो आप स. को ज़ुलक़र्द नामक स्थान पर मिले।

हज़रत सलमा रज़ी. कहते हैं कि मैंने निवेदन पूर्वक कहा कि मैंने दुश्मनों को पानी लेने से रोका हुआ था, और वे प्यासे थे, आप स. मुझे एक सौ मुजाहिदों के साथ रवाना करें, मैं उनका पीछा करके उनके हर गुप्तचर को भी मार दूंगा। आप स. मुस्कुराने लगे, यहाँ तक कि आग के प्रकाश में आप स. के पवित्र दांत नज़र आने लगे और फ़रमाया कि مَلَكْتَ فَأَسْجِحْ अर्थात तुमने उनको यदि पकड़ लिया है तो सुन्दर व्यवहार करो और कठोरता से काम न लो।

इस युद्ध के लिए रसूलुल्लाह स. बुद्धवार के दिन सवेरे को रवाना हुए और आप स. ने एक रात और एक दिन ज़ुलक़र्द में विश्राम फ़रमाया ताकि दुश्मन की कोई सूचना मिल सके। फिर सोमवार के दिन मदीना वापस तशरीफ़ लाए, यूं पाँच रातें मदीना से बाहर रहे।

अब एक सरिय्ये का वर्णन करूंगा, यह सरिय्या हज़रत अबान बिन सईद और नजद की ओर कहलाता है। यह सरिय्या मुहर्रम 7 हिजरी में हुआ, जबकि एक रिवायत में इसकी घटना जमादिस्सानी 7 हिजरी बयान हुई है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने भी इसको मुहर्रम 7 हिजरी में लिखा है जो अनुमान के अधिक निकट है। हज़रत अबान रज़ी. के पिता जी कुरैश के बड़े मुख्याओं में से थे उनके भाई अमरु एवं ख़ालिद पहले मुसलमान हो गए थे। आप रज़ी. 13 हिजरी में शहीद हुए, जबकि एक रिवायत के अनुसार सत्ताईस हिजरी में हज़रत उसमान रज़ी. की ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई। इस सरिय्ये का वर्णन सही बुख़ारी में इस प्रकार आया है कि रसूलुल्लाह स. ने हज़रत अबान रज़ी. को एक सरिय्ये में नियुक्त करके मदीने से नजद की ओर भेजा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ी. कहते हैं कि फिर अबान तथा इनके साथी नबी स. के पास खैबर में आए, इसके बाद कि आप रज़ी. ने इसको विजय कर लिया था।

फिर एक अन्य प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन इतिहास में मिलता है जो खैबर का युद्ध कहलाता है। खैबर एक विशाल हरा भरा स्थान है जिसमें प्रचुर मात्रा में पानी के स्रोत एवं नहरें हैं और अरब महादीप में खजूरों का सबसे बड़ा बाग़ माना जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं के अनुसार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से यहाँ बनी इस्राईल के यहूदी निवास करते थे। कुछ अन्य कथन भी हैं जिनसे यही परिणाम निकलता है कि खैबर में पुराने ज़माने से और बड़े बड़े दुर्ग बनाकर यहूदी आबाद थे। इब्रानी भाषा में खैबर का अर्थ भी क़िला ही है। यहूदियों के कुछ क़बीले मदीने में भी आबाद थे परन्तु खैबर के यहूदियों को एक बात में प्रमुखता प्राप्त थी कि यहाँ के यहूदी अन्य समस्त यहूदियों की तुलना में दलेरी, शौर्य एवं शक्ति में बढ़े हुए थे और उनमें परस्पर एकता भी अन्य यहूदियों की तुलना में अधिक थी जिसके कारण यह अरब देश में शक्ति एवं बहादुरी की इकाई समझी जाने वाली क़ौम थी। मदीने के यहूदी हों अथवा खैबर के यहूदी, आँहज़रत स. और इसलाम के सम्बन्ध में उनकी योजनाएं एवं षड्यंत्र विद्रोह की सीमा तक बढ़े थे। इर्षा एवं द्वेष में बढ़ती ही चले जाने वाली इस क़ौम ने इसलाम और नबी अकरम स. के पवित्र अस्तित्व को भी नष्ट करने के लिए अपने पूरी शक्तियों को लगाने में कोई कमी नहीं की। मदीने से निष्कासन के बाद मदीने के यहूदियों की कुछ संख्या खैबर में जाकर आबाद हो गई थी किन्तु खैबर जो कि पहले से एक विराट सैन्य शक्ति थी, अब मुसलमानों के विरुद्ध भयानक षड्यंत्रों का केंद्र बन गया। तो यह वह विशेष पृष्ठभूमि थी कि नबी करीम स. ने ख़ुदाई संकेतों के माध्यम से यह निर्णय लिया कि खैबर की ओर बढ़ा जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि मूल रूप में हुदैबियः की सन्धि एक बड़ी विजय थी। क़ुरआन करीम ने इसे एक महान विजय घोषित किया है। जैसा कि फ़रमाया कि- إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا निःसन्देह हमने तुझे एक खुली खुली विजय प्रदान की है, और फतह मुबीन का यह वह खुला दरवाज़ा था कि जिससे गुज़रते हुए खैबर और मक्का जैसी महानतम विजय प्राप्त हुईं। वास्तव में अल्लाह तआला ने उस समय ही खैबर पर विजय का वादा फ़रमा दिया

था जब सुलह हुदैबियः से वापसी पर मक्का और मदीना के बीच सूरः अलफ़तह नाजिल हुई। रसूलुल्लाह स. ने खैबर की ओर जाने के लिए जब मनादी करवाई तो यह घोषणा करवाई कि केवल वही साथ चलेंगे जो सुलह हुदैबियः में शरीक थे। एक रिवायत के अनुसार आँहज़रत स. ने फ़रमाया कि जो युद्ध में विजय होने पर धन एकत्र करने के उद्देश्य से निकल रहे हैं वे मेरे साथ न निकलें, केवल वही लोग मेरे साथ रवाना हों जो केवल जिहाद में रुचि रखते हैं।

अल्लामा इब्ने सअद तथा इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया है कि सबसे पहली बार खैबर की लड़ाई में झंडे का वर्णन मिलता है, इससे पहले केवल छोटे झंडे होते थे। आप स. का झंडा काले रंग का था, जो हज़रत आयशा रज़ी. की चादर से बनाया गया था, इसका नाम उक़ाब था। रिवायत में हज़रत अली रज़ी. को भी एक झंडा दिए जाने का वर्णन मिलता है परन्तु वह झंडा खैबर में दिया गया था। इस यात्रा में उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. आप स. के साथ थीं। एक रिवायत के अनुसार छः सात महिला सहाबी भी इस अभियान में आप स. के साथ हो लीं, जबकि एक अन्य रिवायत के अनुसार बीस महिला सहाबी इस युद्ध में शामिल हुईं।

खैबर के यहूदियों को जब मुसलमानों की सेना के विषय में पता चला तो उन्होंने एक प्रतिनिधि मंडल तय्यार करके आस पास के योद्धा क़बीलों की ओर भेजा ताकि इनसे सैन्य सहयोग की प्रार्थना की जाए। मुर्रह नामक क़बीले ने दूर दर्शिता से काम लेते हुए सहायता करने से इनकार कर दिया, परन्तु बनू असद और बनू गतफ़ान जैसे योद्धा क़बीले हथियार बंद सैनिकों के साथ सहायता के लिए तय्यार हो गए।

हुज़ूरे अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि इस घटना की अभी और बातें शेष हैं जो आइंदा बयान करूंगा।

दूसरे ख़ुतबह से पहले हुज़ूरे अनवर ने तीन मृतकों मुकर्रम मुहम्मद अशरफ़ साहब इब्ने मुहम्मद बख्श साहब आफ़ मंडी बहाउद्दीन, मुकर्रम हबीब मुहम्मद शास्त्री साहब नायब अमीर दित्तीय कीनिया इब्ने मुकर्रम मुहम्मद हबीब शास्त्री साहब, और मुकर्रम अनूबी मदिंगो साहब ज़िमबाबवे का सदवर्णन फ़रमाते हुए इनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई। हुज़ूर-ए-अनवर ने समस्त मृतकों के लिए मगफ़िरत और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131